जब कुँए का जल ऊपर आ गया

यन्नामश्रुति मात्रेण पुमान भवति निर्मल:।
तस्य तीर्थपद: किं व दासानामवशिषयते।।

(श्रीमद् भागवत ९/५/१६)

"जिनके मंगलमय नामों के श्रवण मात्र से जीव निर्मल हो जाता है, उन्हीं तीर्थपाद भगवान के चरण कमलों के दास है उनके लिए कौन सा कर्तव्य शेष रह जाता है। अर्थात् उन्हें कुछ भी करना शेष नहीं रहता। उनका जीवन तो ईश्वरेच्छा से लोक कल्याण के लिए होता है।"

भगवान के अवतार का मुख्य प्रयोजन अज्ञान व अंधकार से घिरे हुए जीवों को ज्ञान एवं प्रकाश देने के लिए और दुख पीड़ाग्रस्त मनुष्यों को सुख व शान्ति प्रदान करने के लिए होता है। वे कर्मों में लीन रहते हुए भी कर्मों से विरक्त रहते हैं। स्वयं भिक्षा पर निर्वाह करके संसार को दैवी संपदा के रत्न लुटाते रहते हैं। वे स्वयं आत्मानन्द से संतुष्ट रहते हैं किन्तु संसार को सभी सुख सुविधाएँ प्रदान करते हैं। संसार की दृष्टि में वे निकम्मे, निष्क्रिय एवं भिखमंगे होते हैं। किन्तु दुनिया के बड़े-बड़े बादशाह भिक्षुक बनकर उनके दर पर जाते हैं व मन की मुरादें पूरी करते हैं। राजा दलीप, राजा दशरथ आदि को संतान के लिए महर्षि वशिष्ठ के दर पर जाना पड़ा। वास्तव में संत व गुरु का दर ऐसा दर है जहाँ दीन दुखी, निर्धन, जिज्ञासु, ज्ञानी जो भी भक्त आता है उसकी कामना की झोली भर जाती है। भगवान की तरह इन संतों की भी यही प्रतिज्ञा होती है कि सज्जन-दुर्जन, धनी-निर्धन, राजा-रंक, रूप-कुरूप सभी का दुख दूर करेंगे।

सुथरे शाह जी को लाहौर में रहते लगभग दो मास का समय हो गया था। मृगनाभि में स्थित कस्तूरी की गंध उस तक सीमित नहीं रहती, उसकी सुवास से जंगल सुवासित हो जाता है। सुथरे शाह जी की भक्ति, प्रेम, तेज, तपस्या और त्याग की चर्चा जनजन का विषय बन गई थी। हिन्दुओं के

साथ-साथ मुसलमान भी उनके दर्शन को आने लगे थे। हिन्दू उन्हें अपना संत मानकर उनकी आराधना करते थे तो मुसलमान उनको सच्चा पीर समझते हुए उनकी बन्दगी करते थे। वे इनमें खुदा के नूर और रुहानी जलवे का दीदार करके दिल से इनकी इबादत करते थे।

एक मुसलमान फकीर सुथरे शाह जी की बढ़ती हुई कीर्ति को देखकर ईर्ष्या करने लगा। वह घूम-घूम कर भोली-भाली जनता को भ्रमित करने लगा। वह अच्छा गाता बजाता भी था। उसके पास भी एक चमत्कारी डण्डा था जिससे वह लोगों को गुमराह कर चमत्कार का दुरुप्रयोग कर रहा था। वह सुथरे शाह जी के विरुद्ध प्रचार करने लगा। वास्तविकता यह थी कि वह जिस किसी प्रकार से सुथरे शाह जी का डण्डा जो उन्हें माता नैना देवी जी ने साक्षात् प्रकट होकर दिया था, हथियाना चाहता था।

वह फकीर सुथरे शाह जी व उनके शिष्यों को ललकारने लगा। सुथरे शाह जी ने उस पीर से कहा कि आप भी ईश्वर को मानने वाले हैं मैं भी उसे मानने वाला हूँ। आपके पास भी एक शक्ति है व मेरे पास भी एक शक्ति है तो क्यों न हम इस शक्ति को लोक कल्याण के लिए लगाऐं। 'तुम काफिर हो, मेरा डण्डा ही चमत्कारी है। आज़मा कर देख लो।' फकीर ने कहा। 'किसी भी चमत्कार को आज़माना उसकी तौहीन होती है, मैं इसे आज़माकर इसकी तौहीन नहीं करना चाहता।' सुथरे शाह जी ने कहा। वह फकीर सुथरे शाह जी के साथ भद्दा मज़ाक करने लगा। जनता के कहने पर सुथरे शाह जी परीक्षा देने के लिए तैयार हो गए। शर्त यह रखी गई कि दोनों डण्डे कुँए में डाल दिए जायें। जिसके पास शक्ति होगी वह कुँए का जल ऊपर ले आयेगा व दोनों शक्तियाँ उसकी होंगी।

दोनों ने अपनी-अपनी शक्ति (डण्डे) को कुँए में डाल दिया। सैंकड़ों की संख्या में हिन्दू व मुसलमान इस दृश्य को देखने के लिए जमा हो गए।

सुथरे शाह जी गहरे संत थे। वे उस फकीर की चालाकी को भाँप गए और बोले आप ही पहले अपनी शक्ति का चमत्कार दिखलाइए। फकीर यही चाहता था, उसने खूब यत्न किये, खूब ऊँची आवाज़ में सिर हिला-हिलाकर तंत्र पढ़े। कई घण्टे बीत गए पर जल ऊपर नहीं आया। आखिरकार सिर पकड़ कर बैठ गया। सुथरे शाह जी ने अपनी समाधि लगा ली थी। सारी जनता हैरान थी कि यह सुथरा संत तो बड़ा बेपरवाह, मनमौजी संत है जिसे अपने चमत्कार की कोई परवाह ही नहीं। सुथरे शाह जी समाधि के बाहर आ गए व बोले-

बेपरवाईयाँ तेरियाँ प्रभु डाढा बेपरवाह,
भेद न कोई पा सके कह गए सुथरे शाह।।

सुथरे शाह जी कुँए के पास जाकर खड़े हो गए। मन हो मन अपने धर्म पिता श्री गुरु हरगोबिन्द जी के चरणों में प्रणाम किया। फिर अपने गुरु भगवान श्रीचन्द्र जी को प्रणाम किया। उनके द्वारा दी गई सेली को गले से उतारा व हाथ में लेकर कहने लगे - हे गुरु देव, आप साक्षात् शंकर के अवतार हैं। ऋद्धि सिद्धि आपके चरणों की दासी है। माता नैंना देवी द्वारा प्रदत्त शक्ति

(डण्डा) कुँए के जल को पवित्र कर ही चुकी है। आप द्वारा दी गई यह सेली भी मैं इस जल को अर्पित करता हूँ। इन दोनों की लाज आपके हाथों में है। यह कहकर उन्होंने सेली को कुँए में छोड़ दिया। जल का स्पर्श पाकर शिव की शक्ति (सेली) व माँ की शक्ति (डण्डा) दोनों मिलकर एक हो गए। कुँए का जल धीरे-धीरे ऊपर आने लगा। सुथरे शाह जी का डण्डा व सेली उस फकीर के डण्डे को भी ऊपर ले आया। इस दृश्य को देखकर सारी जनता स्तब्ध रह गई व मुसलमान फकीर भी आश्चर्यचकित रह गया। उसका गर्व चूर-चूर हो गया। सुथरे शाह जी ने शर्तानुसार दोनों डण्डे व सेली निकाल लिए। अब वह फकीर सुथरे शाह जी के चरणों में गिर पड़ा व गिड़गिड़ाने लगा - मुझे माफ कर दो मेरी शक्ति (डण्डा) मुझे वापिस कर दो। यदि आप मेरी शक्ति लेकर चले जायेंगे तो मैं कहीं का न रहूँगा। वह तौबा करने लगा, आगे से मैं कभी भोली-भाली जनता को गुमराह नहीं करुँगा तथा अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल नहीं करुँगा।

तब सुथरे शाह जी को उस फकीर पर दया आ गई। वे बोले - 'शर्त के अनुसार आप अपनी शक्ति हार चुके हो। परन्तु आपके तौबा करने पर तथा प्रतिज्ञा करने पर कि आप भोली भाली जनता को मूर्ख नहीं बनाऐंगे, मैं आपको इस डण्डे का कुछ भाग, जिसे आप अपने हाथ में चूड़ियाँ पहनकर उसी हाथ से डण्डा बजाकर व गाकर लोगों को परमात्मा की भक्ति का ज्ञान देंगे, देता हूँ तथा आपको 'बेनवा फकीर' के नाम से सब जानेंगे।' तब सुथरे शाह जी अपने दोनों हाथों में डण्डा लेकर डण्डे पर डण्डा बजाते हुए मस्ती में झूमकर गाते हुए चल दिए।

आठों पहर जै धरम दी, आठों पहर जै।